IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 4, Issue 2, September 2024
Impact Factor: 7.57

दिनकर के काव्य में सामाजिक प्रभाव

डॉ. कमल किशोर यादव
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
भाासकीय छत्रसाल महाविद्यालय पिछोर जिला शिवपुरी

शोध सार–

साहित्यकार समाज का दृष्टा और सृश्टा दोनों होता है। त्रिकालदर्शी वह वर्तमान के चौराहे पर खडा अपनी दृश्टि भूत और अनागत भविश्य दोनों ओर फेंकता है। वर्तमान तो उसकी आंखों के सामने सदैव ही बना रहता है। साहित्य उसकी आँखों के समग्र संदेश में बना रहता है। वह यथास्थितिवादी नहीं होता। उसकी आर्थिक सामाजिक स्थिति परिस्थितियाँ उसकी राजनीतिक धर्म संस्कृति व्यवहार आदि पर अपने साहित्य में झलकती हैं। वह भाषा के माध्यम से यह सब अभिव्यक्त करता है। कवि अथवा साहित्यकार अपने समय का सजग प्रहरी सच्चा संवेदन काव्यकार होता है। वह प्रवृति और प्रवाह से जुड़कर नव चेतना को उत्प्रेरित करता है। इसका ही कारण है कि प्रत्येक युग का साहित्य उसके युग का दर्पण नहीं बल्कि उस साहित्य निमार्ता के साथ वह युग जीवंत हो जाता है। उसका साहित्य समाज के लिए किसी अंश में प्रेरणास्रोत बनता है। सच्चे कलाकार होने के नाते कवि दिनकर ने भी अपने साहित्य में समाज की अनेक स्थितियों का वर्णन किया है। उन्होंने अपने समकाल उपेक्षित शोषित वंचित वर्तमानकालीन समाज की हुई पीड़ा तथा प्रवृत्ति और उन्नति का चित्र तो खींचा ही है साथ ही उन्होंने परिवर्तनशील समाज के नैतिक स्तर में जो ह्रास हुआ है उसका भी चित्र खींचा है। उन्होंने समाज में मनुष्य द्वारा हो रहे मनुष्य के शोषण उत्पीड़न दमन के साथ साथ मनुष्य की संकुचित स्वार्थ नीति समाज में प्रचलित जाति पाँति वर्णभेद एवं वर्ग भेद के झगड़े वैज्ञानिक प्रवृत्ति और उन विभीषिकाओं को उद्घाटित किया है। विषमता से ग्रस्त मानव जीवन ऊपर से शिष्ट और सुसंस्कृत दिखाई पड़ने वाला व्यक्ति भीतर से कितना अशिष्ट और कुशल होता है जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण आज के नागारिक समाज में देखा जा सकता है। समाज का शासक वर्ग अपने स्वार्थों की सिद्धि के हेतु मनुष्य मनुष्य में भेद भावना उत्पन्न करता रहता है। यह मनुष्य समाज को समानतावादी एवं न्यायसंगत स्थिति के बाहर ही नहीं रखता है अपितु उसकी पारंपरिक समस्याओं को और अधिक विकराल बना देता है। इसी कारण उसकी आंतरिक व्यथा अपनी अनुभूतियों को प्रकट करती है।